تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا

जानो फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का

مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا

फ़ज़्ल तलाश करो[24] और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह् पाओ और जब उन्हों ने

تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

कोई तिजारत या खेल देखा उस की त़रफ़ चल दिये[25] और तुम्हें ख़ुत़्बे में खड़ा छोड़ गए[26] तुम फ़रमाओ वोह जो अल्लाह के पास है[27]

خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾ ع

खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह का रिज़्क़ सब से अच्छा

ع ٢/١٢

اٰياتها ١١ ﴿٦٣﴾ سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ ﴿١٠٤﴾ ركوعاتها ٢

सूरए मुनाफ़िक़ून मदनिय्या है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

अ़रबी ज़बान में **अ़रूबा** था, जुमुआ़ इस को इस लिये कहा जाता है कि नमाज़ के लिये जमाअ़तों का इज्तिमाअ़ होता है वज्हे तस्मिया में और भी अक़्वाल हैं, सब से पहले जिस शख़्स ने इस दिन का नाम जुमुआ़ रखा वोह का'ब बिन लुई हैं, पहला जुमुआ़ जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब के साथ पढ़ा अस्ह़ाबे सियर का बयान है कि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام जब हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए तो बारहवीं रबीउ़ल अव्वल रोज़े दो शम्बा (पीर) को चाश्त के वक़्त मक़ामे क़ुबा में इक़ामत फ़रमाई दो शम्बा, सेह शम्बा (मंगल), चहार शम्बा (बुध), पंज शम्बा (जुमे'रात) यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुन्याद रखी, रोज़े जुमुआ़ मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाया, बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़्ने वादी में जुमुआ़ का वक़्त आया, उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वहां जुमुआ़ पढ़ाया और ख़ुत़्बा फ़रमाया। जुमुआ़ का दिन सय्यिदुल अय्याम है जो मोमिन इस रोज़ मरे ह़दीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला उस को शहीद का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है और फ़ित्नए क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखता है। अज़ान से मुराद अज़ाने अव्वल है न अज़ाने सानी जो ख़ुत़्बे से मुत्तसिल होती है, अगर्चे अज़ाने अव्वल ज़मानए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه में इज़ाफ़ा की गई मगर वुजूबे सअ़्य और तर्के बैअ़ व शिराअ इसी से मुतअ़ल्लिक़ है। (كذا فى الدر المختار) **22 :** दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मक़्सूद येह है कि नमाज़ के लिये तय्यारी शुरूअ़ करो और "ज़िक्रुल्लाह" से जुम्हूर के नज़्दीक ख़ुत़्बा मुराद है। **23 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जुमुआ़ की अज़ान होते ही ख़रीदो फ़रोख़्त ह़राम हो जाती है और दुन्या के तमाम मशाग़िल जो ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब हों इस में दाख़िल हैं, अज़ान होने के बा'द सब को तर्क करना लाज़िम है। **मस्अला :** इस आयत से नमाज़े जुमुआ़ की फ़र्ज़िय्यत और बैअ़ वग़ैरा मशाग़िले दुन्यविय्या की हुरमत और सई या'नी एहतिमामे नमाज़ का वुजूब साबित हुवा और ख़ुत़्बा भी साबित हुवा। **मस्अला :** जुमुआ़ मुसल्मान मर्द, मुकल्लफ़, आज़ाद व तन्दुरुस्त, मुक़ीम पर शहर में वाजिब होता है, नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता, सिह़्ह़ते जुमुआ़ के लिये सात शर्तें हैं (1) शहर, जहां फ़ैसलए मुक़द्दमात का इख़्तियार रखने वाला कोई ह़ाकिम मौजूद हो या फ़िनाए शहर जो शहर से मुत्तसिल हो और अहले शहर उस को अपने ह़वाइज के काम में लाते हों। (2) ह़ाकिम (3) वक़्ते ज़ोहर (4) ख़ुत़्बा वक़्त के अन्दर (5) ख़ुत़्बे का क़ब्ले नमाज़ होना इतनी जमाअ़त में जो जुमुआ़ के लिये ज़रूरी है (6) जमाअ़त और इस की अक़ल मिक़्दार तीन मर्द हैं सिवाए इमाम के (7) इज़्ने आ़म कि नमाज़ियों को मक़ामे नमाज़ में आने से रोका न जाए। **24 :** या'नी अब तुम्हारे लिये जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या त़लबे इल्म या इ़यादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़लमा और इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो। **25 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रोज़े जुमुआ़ ख़ुत़्बा फ़रमा रहे थे इस ह़ाल में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और ह़स्बे दस्तूर ए'लान के लिये त़ब्ल बजाया गया, ज़माना बहुत तंगी और गिरानी (महंगाई) का था, लोग ब ईं ख़याल उस की त़रफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अज्नास ख़त्म हो जाएं और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **26 मस्अला :** इस से साबित हुवा कि ख़त़ीब को खड़े हो कर ख़ुत़्बा पढ़ना चाहिये। **27 :** या'नी नमाज़ का अज्रो सवाब और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहने की बरकत व सआ़दत।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ وقف لازم

जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर होते हैं[2] कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन **अल्लाह** के रसूल हैं और **अल्लाह** जानता है

اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾ اِتَّخَذُوْۤا

कि तुम उस के रसूल हो और **अल्लाह** गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं[3] उन्हों ने अपनी

اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

क़समों को ढाल ठहरा लिया[4] तो **अल्लाह** की राह से रोका[5] बेशक वोह बहुत ही बुरे काम

يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا

करते हैं[6] येह इस लिये कि वोह ज़बान से ईमान लाए फिर दिल से काफ़िर हुए तो उन के दिलों पर मोहर कर दी गई तो अब

يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾ وَ اِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَ اِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ

वोह कुछ नहीं समझते और जब तू उन्हें देखे[7] उन के जिस्म तुझे भले मा'लूम हों और अगर बात करें तो तू उन की बात

لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ

ग़ौर से सुने[8] गोया वोह कड़ियां हैं दीवार से टिकाई हुई[9] हर बुलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर ले जाते हैं[10]

هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾ وَ اِذَا قِيْلَ

वोह दुश्मन हैं[11] तो उन से बचते रहो[12] **अल्लाह** उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं[13] और जब उन से

1 : सूरए मुनाफ़िक़ून मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, ग्यारह 11 आयतें, एक सो अस्सी 180 कलिमे, और नव सो छिहत्तर 976 ह़र्फ़ हैं। **2 :** तो अपने ज़मीर के ख़िलाफ़ **3 :** उन का बातिन ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ नहीं जो कहते हैं उस के ख़िलाफ़ ए'तिक़ाद रखते हैं। **4 :** कि उन के ज़रीए़ से क़त्ल व क़ैद से मह़फ़ूज़ रहें। **5 :** लोगों को या'नी जिहाद से या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से त़रह़ त़रह़ के वस्वसे और शुब्हे डाल कर। **6 :** कि ब मुक़ाबला ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करते हैं। **7 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरा के **8 :** इब्ने उबय जसीम, सबीह़, ख़ूबरू व ख़ुश बयान आदमी था और उस के साथ वाले मुनाफ़िक़ीन क़रीब क़रीब वैसे ही थे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस शरीफ़ में जब येह लोग ह़ाज़िर होते तो ख़ूब बातें बनाते जो सुनने वाले को अच्छी मा'लूम होतीं। **9 :** जिन में बेजान तस्वीर की त़रह़ न ईमान की रूह़ न अन्जाम सोचने वाली अ़क़्ल। **10 :** कोई किसी को पुकारता हो या अपनी गुमी चीज़ ढूंडता हो या लश्कर में किसी मक़्सद के लिये कोई बात बुलन्द आवाज़ से कहें तो येह अपने ख़ुब्से नफ़्स और सूए ज़न से येही समझते हैं कि उन्हें कुछ कहा गया और उन्हें येह अन्देशा रहता है कि उन के ह़क़ में कोई ऐसा मज़्मून नाज़िल हुवा जिस से उन के राज़ फ़ाश हो जाएं। **11 :** दिल में शदीद अ़दावत रखते हैं और कुफ़्फ़ार के पास यहां की ख़बरें पहुंचाते हैं उन के जासूस हैं। **12 :** और उन के ज़ाहिर ह़ाल से धोका न खाओ। **13 :** और रोशन बुरहानें क़ाइम होने के बा वुजूद ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होते हैं।

www.dawateislami.net

لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ

कहा जाए कि आओ[14] रसूलुल्लाह तुम्हारे लिये मुआफ़ी चाहें तो अपने सर घुमाते हैं और तुम उन्हें देखो

يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝٥ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ

कि गुरूर करते हुए मुंह फेर लेते हैं[15] उन पर एक सा है तुम उन की मुआफ़ी चाहो या न

تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

चाहो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा[16] बेशक अल्लाह फ़ासिक़ों को

الْفٰسِقِيْنَ ۝٦ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

राह नहीं देता वोही हैं जो कहते हैं उन पर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं

حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

यहां तक कि परेशान हो जाएं और अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के ख़ज़ाने[17] मगर मुनाफ़िक़ों को

لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ

समझ नहीं कहते हैं हम मदीने फिर कर गए[18] तो ज़रूर जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है वोह उस में से निकाल देगा

مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है[19] और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों

14 : मुआफ़ी चाहने के लिये **15 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए मुरैसीअ़ से फ़ारिग़ हो कर जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सरे चाह (एक कूंएं के पास) नुज़ूल फ़रमाया तो वहां येह वाक़िआ़ पेश आया कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अजीर जहजाह ग़िफ़ारी और इब्ने उबय के ह़लीफ़ सिनान बिन वबर जुहनी के दरमियान जंग हो गई, जहजाह ने मुहाजिरीन को और सिनान ने अन्सार को पुकारा, उस वक़्त इब्ने उबय मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में बहुत गुस्ताख़ाना और बेहूदा बातें बकीं और येह कहा कि मदीनए त़य्यिबा पहुंच कर हम में से इ़ज़्ज़त वाले ज़लीलों को निकाल देंगे और अपनी क़ौम से कहने लगा कि अगर तुम इन्हें अपना झूटा खाना न दो तो येह तुम्हारी गरदनों पर सुवार न हों अब इन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि येह मदीने से भाग जाएं, उस की येह ना शाइस्ता गुफ़्तगू सुन कर ज़ैद बिन अरक़म को ताब न रही, उन्हों ने उस से फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम तू ही ज़लील है अपनी क़ौम में बुग़्ज़ डालने वाला और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सरे मुबारक पर मे'राज का ताज है, ह़ज़रते रहमान ने उन्हें इ़ज़्ज़तो क़ुव्वत दी है, इब्ने उबय कहने लगा : चुप मैं तो हंसी से कह रहा था, ज़ैद बिन अरक़म ने येह ख़बर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचाई, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इब्ने उबय के क़त्ल की इजाज़त चाही सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया और इर्शाद किया कि लोग कहेंगे कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) अपने अस्ह़ाब को क़त्ल करते हैं, हुज़ूरे अन्वर ने इब्ने उबय से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तू ने येह बातें कही थीं ? वोह मुकर गया और क़सम खा गया कि मैं ने कुछ भी नहीं कहा, उस के साथी जो मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर थे वोह अ़र्ज़ करने लगे कि इब्ने उबय बूढ़ा बड़ा शख़्स है येह जो कहता है ठीक ही कहता है, ज़ैद बिन अरक़म को शायद धोका हुवा हो और बात याद न रही हो, फिर जब ऊपर की आयतें नाज़िल हुईं और इब्ने उबय का झूट ज़ाहिर हो गया तो उस से कहा गया कि जा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त कर हुज़ूर तेरे लिये अल्लाह तआ़ला से मुआफ़ी चाहें, तो गरदन फेरी और कहने लगा कि तुम ने कहा ईमान ला तो मैं ईमान ले आया तुम ने कहा ज़कात दे तो मैं ने ज़कात दी अब येही बाक़ी रह गया है कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सज्दा करूं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **16 :** इस लिये कि वोह निफ़ाक़ में रासिख़ और पुख़्ता हो चुके हैं। **17 :** वोही सब का राज़िक़ है **18 :** इस ग़ज़्वे से लौट कर **19 :** मुनाफ़िक़ीन ने अपने को इ़ज़्ज़त वाला कहा

www.dawateislami.net

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ع ١٣

को ख़बर नहीं[20] ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के

عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا

ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे[21] और जो ऐसा करे[22] तो वोही लोग नुक़्सान में हैं[23] और हमारे दिये में

مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ

से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो[24] क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब

لَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾

तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع ١٤

और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए[25] और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है

اٰیاتها ١٨ | ٦٤ سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٨ | رکوعاتها ٢

सूरए तग़ाबुन मदनिय्या है, इस में अठ्ठारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की ता'रीफ़[2]

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ

और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोही है जिस ने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में

और मोमिनीन को ज़िल्लत वाला। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : 20 : इस आयत के नाज़िल होने के चन्द ही रोज़ बा'द इब्ने उबय मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ की ह़ालत पर मर गया। 21 : पंजगाना नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से 22 : कि दुन्या में मश्ग़ूल हो कर दीन को फ़रामोश कर दे और माल की मह़ब्बत में अपने ह़ाल की परवा न करे और औलाद की ख़ुशी के लिये राह़ते आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे 23 : कि उन्हों ने दुन्याए फ़ानी के पीछे दारे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ने'मतों की परवा न की। 24 : या'नी जो सदक़ात वाजिब हैं वोह अदा करो। 25 : जो लौह़े मह़फ़ूज़ में मक्तूब है। 1 : सूरए तग़ाबुन अक्सर के नज़्दीक मदनिय्या है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मक्किय्या है सिवाए तीन 3 आयतों के जो "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ" से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दो 2 रुकूअ़, अठ्ठारह 18 आयतें, दो सो इक्तालीस 241 कलिमे, एक हज़ार सत्तर 1070 ह़र्फ़ हैं। 2 : अपने मुल्क में मुतसर्रिफ़ है जो चाहता है जैसा चाहता है करता है, न कोई शरीक न साझी, सब ने'मतें उसी की हैं।

www.dawateislami.net